ओएसिस हिन्दी प्रेस | पिलानी | शनिवार, अक्टूबर 25, 2008 | कुल पृष्ठ - 4

# प्रवाह

hpc-bits.blogspot.com | hindipressclub@gmail.com

## *अलविदा ओएसिस- 08*

salixaPt

### प्रायोजक कॉर्नर

NOKIA Connecting People
एनटीपीसी NTPC
Foodking
हिएलि HAL
GATI Ahead in reach
MONTE CARLO
CASIO

ओएसिस हिन्दी प्रेस ओएसिस के दौरान प्रकाशित चित्रों के लिए फोटोग्राफी क्लब व् डिपार्टमेन्ट ऑफ़ पी.सी.आर. का आभार व्यक्त करता है |

कैम्पस की बातों के साथ चलने के लिए hpc-bits.blogspot.com ब्लॉग पढ़ते रहें और हमारे प्रकाशन भी डाउनलोड करके पढ़ें]

## मुख्य अतिथि से रूबरू

*श्री निर्मल माथुर ने बिट्स पिलानी को अपनी शैशवास्था में देखा है / मात्र एक दर्शक के रूप में नहीं वरन एक सक्रिय कार्यकर्ता की तरह , जिसने अपने परिश्रम से इस परिसर को वो पहचान दी है जो आज भी हमारे मूल्यों में अमिट छाप , एक सोंधी सी खुशबू की तरह विद्यमान है / बिट्स के छात्र यूनियन का पहला अध्यक्ष होना कोई मामूली बात नहीं थी / इस बात का ज्ञान कालांतर में भारत को भी हुआ, जब श्री माथुर ने बयालीस वर्षों तक विभिन्न कंपनियों में एक कुशल प्रबंधक और असरदार नेता के रूप में उभरे / परमपूज्य श्री घनश्याम दासजी बिरला ने इनके अन्दर छिपी प्रतिभा को देखकर इन्हें HINDALCO में प्रबंधक के ओहदे पर कार्य करने का न्योता दिया /*

*पिछले पच्चीस वर्षों से श्री माथुर जिंदल स्टील से जुड़े हुए हैं और स्टील फर्नेस एस्सोसिएशन ऑफ़ इंडिया के अध्यक्ष भी हैं / अंतर्राष्ट्रीय स्टेनलेस स्टील फॉरम की विभिन्न समितियों में एक अनुभवी सदस्य की भूमिका भी आपने बखूबी निभाई है / इस्पात निर्माण से सम्बंधित अनगिनत पहलुओं पर आप पिछले पन्द्रह वर्षों से विश्व भर में व्याख्यान देते आ रहे हैं /*

*आज जिंदल स्टील के कारपोरेट अफेयर्स विभाग में निदेशक के पद पर नियुक्त श्री माथुर भारतीय रोटरी क्लब की मध्य दिल्ली शाखा के प्रेजिडेंट भी हैं /*

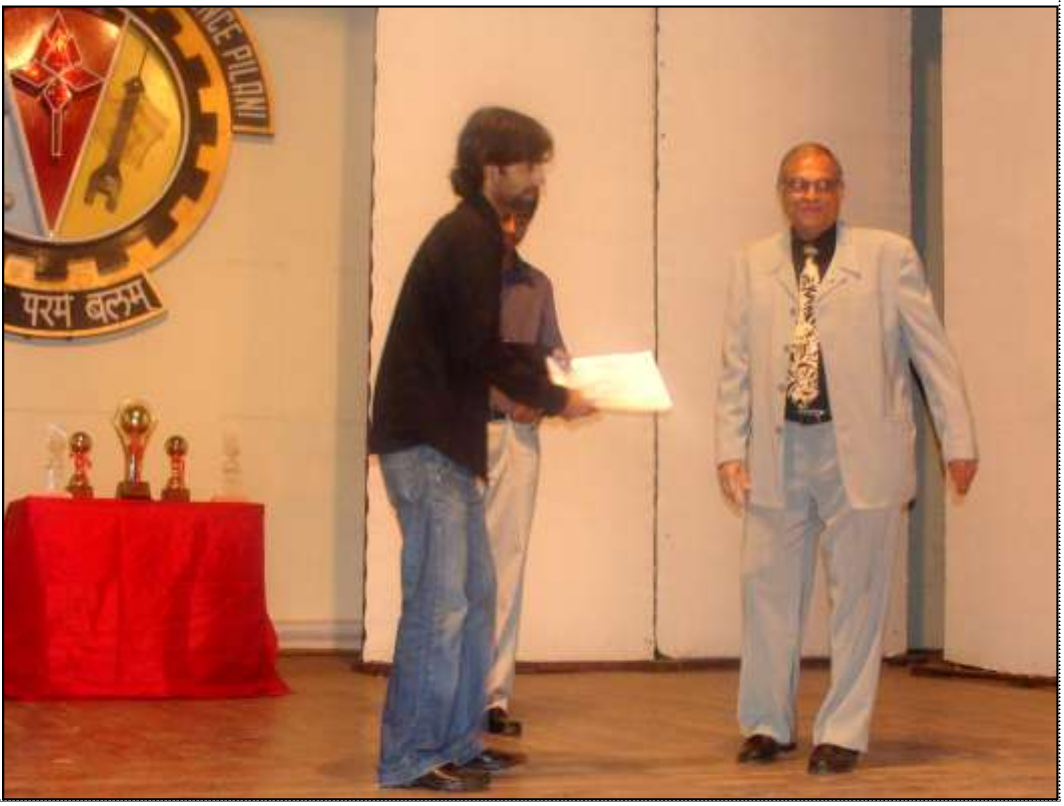

# एक मुलाकात: सर्वप्रथम बिट्सियन प्रेज़ से

**1.चार दशकों के बाद बिट्स पिलानी आने पर भावनाएँ:**

आज भी परिसर लगभग सत्तर प्रतिशत वैसा ही है जैसा तब था | यह ऑडी का मुख्य द्वार , ये सड़कें , ये मन्दिर- समय के झोकों से अनछुए रह गए हैं| हाँ, बिरलाजी की प्रतिमा जो मन्दिर के सामने दिखती है , वो हमारे समय में नहीं थी और उनके देहांत के बाद ही स्थापित हुई है |

**2.आपके समय में किस प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम होते थे ?**

मैं जब पिलानी में छात्र था , तब ये परिसर काफ़ी नया था और आज के समय जैसी सुविधाएं नहीं थीं | ओएसिस 1972 में शुरू हुआ था, लेकिन इससे पहले भी समय समय पर संगीत,नृत्य और नाटक होते रहते थे |

**3.आप अपनी अध्यक्षता की सबसे बड़ी उपलब्धि किसे मानते हैं?**

मैंने अपना चुनाव एक ही वोट से जीता था | मैं जानता था कि मेरे प्रतिद्वंदी श्री मधुकर कपूर एक योग्य नेता थे और मैंने उन्हें यूनियन के उपाध्यक्ष के पद पर आसीन होकर जनता की सेवा करने का अनुरोध किया जिसे उन्होंने स्वीकार भी किया | उन दिनों (आज की तरह ही) उपाध्यक्ष के पद का प्रावधान नहीं था, परन्तु हमने आपसी मतभेदों को भुलाकर समाज के बड़े हितों के लिए एकजुट होकर काम करने का निश्चय किया |

**4.आपके समय में छात्र संघ के चुनावों का स्वरूप कैसा था?**

मैं अपनी युवावस्था में जॉन ऍफ़. केनेडी से अत्यन्त प्रभावित था| हम चुनाव प्रचार के लिए चौक पर खड़े होकर लोगों से हाथ मिलते और अपने विषय में लोगों के बताते | मैं भवनों में टी.टी. टेबल पर खड़ा होकर श्री केनेडी के आदर्शों से ओत-प्रोत राजनैतिक विचारधारा का प्रचार करता था | मैंने काफ़ी पहले निश्चय कर लिया था कि मुझे छात्र संघ का हिस्सा बनना है | मतगणना तीन बार हुई , जो कि उस समय हाथों से ही करनी पड़ती थी, और विजेता का फ़ैसला करना बहुत कठिन साबित हुआ |

**5.अगर आपको पुनः बिट्स के छात्र संघ का प्रेजिडेंट बनाया जाए तो आप किन चीज़ों में बदलाव लाना चाहेंगे?**

मैं हर छात्र /छात्रा के होठों पर मुस्कराहट देखना चाहूँगा | हर बिट्सियन को अपने कपडों पर प्रतीक के रूप में भारतीयता की कोई निशानी , एक छोटा सा झंडा ही सही, रखनी चाहिए| मैं अपने कोट के पल्ले पर विश्व का एक नक्शा लगाये रखता हूँ क्योंकि मैं अपने आप को दुनिया का नागरिक समझता हूँ| भारत में धर्म एवं क्षेत्र के नाम पर जो तनाव है उसका निराकरण करने के लिए बिट्स पिलानी जैसे परिसरों में पढ़ रहे युवाओं में एकता सामंजस्य लाना चाहूँगा |

**6.आपने इस्पात उद्योग को भारत में शून्यता से उभरते देखा है| इस प्रक्रिया और वर्त्तमान दशा और दिशा पर दो शब्द |**

इस्पात उद्योग में एक सफल उद्योगपति बनने के लिए किसी भी कंपनी को अथक शोध और पर्यावरण के प्रति अनुकूलता का ध्यान रखना होगा | मैंने भारतीय स्टील उद्योग को दो कंपनियों की निजी संपत्ति से उठकर देश के एक प्रमुख निर्यात के स्रोत के रूप मेंउभारते देखा है | फिर भी स्टेनलेस स्टील उद्योग उतना विकसित नहीं है और हाल ही में हमने Automobile, home appliances और surgical instruments के लिए स्टेनलेस स्टील बनाना प्रारम्भ किया है |

**7.रोटरी क्लब के अध्यक्ष के अपने कार्यकाल में आपने क्या सुधार किए हैं?**

मैं रोटरी क्लब की दिल्ली शाखा का अध्यक्ष सन 1983 से हूँ | आम तौर पर किसी व्यक्ति को यह पद दोबारा नहीं मिलता परन्तु अपने शुभचिंतकों के आग्रह पर मैंने अभी तक पच्चीस वर्षों से यह कार्यभार संभाला है| हम दिल्ली में कई केन्द्रों पर युवक-युवतियों को रोजगारी शिक्षा देते हैं | कम्प्यूटर कोर्स, ब्यूटीशियन कोर्स ,रेडीमेड कपड़े बनाने के कोर्स से लोगों को बहुत लाभ हुआ है| हमने दृष्टिहीन समाज के उपकार के लिए विदेश से मंगवाए गए कुछ उपकरणों का भी वितरण किया है जिससे वे अपना जीवन दूसरों से कम से कम सहायता लेकर गुजार सकें | जिंदल स्टील की तरफ़ से भी एक समाज कल्याण परियोजना के अंतर्गत हम जल्द ही दिल्ली की जनता को एक अनमोल भेंट देंगे |

**8.श्री घनश्याम दास जी बिरला का आपके जीवन पर प्रभाव:**

श्री घनश्याम दास जी से मैं बीस वर्ष की अवस्था मैं मिला था| तब वे मुझसे कुछ पचास वर्ष बड़े होंगे मगर उन्होनें कभी मुझे इस बात का एहसास नहीं होने दिया | जब मैं उनके अन्दर HINDALCO में कार्यरत था , तब निरंतर उन्होनें मुझे पत्रों के माध्यम से अनमोल बातें बताईं | मैं इन आशीर्वचनों की एक प्रति बिट्स के पुस्तकालय में रखवाना चाहूँगा|

-शैलेश व् पुष्प

# चलते-चलते

अब ओएसिस-08 समाप्त हो चुका है | कहते हुए तो खुशी नहीं होती है पर भारी मन से ही सही, लेकिन हाँ, ओएसिस-08 समापन समारोह के साथ समाप्त हो चुका है |

पता नहीं, आपको विश्वास हो रहा है कि नहीं, लेकिन यहाँ सभी यह सोचते हुए ही सहम जाते हैं की जो FD, जो लॉन, जो ऑडी, जो सड़क पिछले 4 दिनों तक लोगों के मेले से मिला हुआ था, आज फ़िर से सूना पड़ जाएगा और वो भी जब ख़ुद बिट्सियन्स दिवाली के लिए घर जा चुके हैं या चले जाएँगे | यह बात तो पक्की है की दिवाली पर यहाँ जो भी छात्र ठहरेंगे, ये सबसे खाली दिवाली रहेगी | आज से वो रातों जागना, ऑडी में हल्ला करना, सड़कों पर दोस्तों के साथ बिंदास गाना गाते हुए चलना, इधर-उधर "बर्ड वाचिंग" करना, किसी को साथ में डांस करने के लिए C-Lawns खींच कर ले जाना, M-Lawns में गेम्स खेलना और एक टी-शर्ट जीतने पर हल्ला करना, इवेंट्स में जीतने के लिए जी-जान लगा देना, चाट-पूड़ी खाना और सबसे पहले इतनी खुली हवा का आनंद उठाना, शायद काफ़ी लोगों को एक साल का इंतज़ार करना पड़ेगा |

अगर इस ओएसिस की समीक्षा करें तो सभी प्रॉफ शो बेहतरीन रहे और जनता का हर इवेंट में जोश काफ़ी जोशीला रहा | जहाँ लोगों ने DJ में अपने पाँव थिर्काए वहीँ पासिंग द पिल्लो जैसे गेम्स में कई लोगों ने काफ़ी कुछ जीता भी | सभी ने इस मस्ती भरे 4 दिनों का पूरा पूरा फायदा उठाया [कुछ पुरूस्कार जीत रहे थे तो कुछ दिल जीतने में भी सफल रहे] |

खैर इस उम्र में अगर कोई इन सब मस्ती से वंचित रह जाता है, तो शायद ज़िन्दगी में हमेशा के लिए मन में ग्लानी रह जाएगी |

जो भी बिट्सियन्स घर या ट्रिप पर गए हैं और जो इच्छुक लोग आ नहीं सके उनसे बस यही कहना चाहेंगे कि अगले ओएसिस की तैयारियों में जुट जाएं | इस बार ना सही अगली बार ही सही पर ओएसिस जैसे ज़बरदस्त सांस्कृतिक त्यौहार में ज़रूर आईयेगा | आपका हमेशा स्वागत है |

सभी स्टूकंस, क्लब के संयोजकों, डीन, प्रोफेसर और बाकी सभी लोगों को जिन्होनें इस फेस्टिवल को एक ज़बरदस्त हिट बनाने के लिए अथक प्रयास किया है, को बहुत-बहुत शुभकामनाएं और धन्यवाद | सभी प्रायोजकों को भी बहुत-बहुत धन्यवाद और आशा करते हैं की आप से अगले त्यौहार में फ़िर से मुलकात होगी |

सभी बाहर से आए प्रतियोगियों को भी धन्यवाद जिन्होनें अपने जोश से इस फेस्टिवल में जान डाल दी और आपसे हम फ़िर से रूबरू होना पसंद करेंगे |

सभी जीतने वालों को बधाई और ना जीतने वालों को बस इतना की अगले साल फ़िर से कोशिश करियेगा | आख़िर कोशिश करने पर ही जीतेंगे और वो क्या कहते हैं, कोशिश करने वाले कभी हारते नहीं हैं |

तो अगले पोस्ट, अगले ओएसिस, अगले जोश और अगले जूनून तक के लिए आपसे विदाई लेना चाहेंगे |

आप जहाँ भी रहें, खुश रहें, आबाद रहें और हमेशा मुस्कुराते रहें |

चार लाईनों में कहना चाहेंगे :

"अजब सी" खुशबू मन में रह गई है,

"धूम" और जोश इस दिल में घर कर गई हैं |

दिल में हंसी और रोना दोनों साथ-साथ आएँगे,

"बीते लम्हें जब भी याद आएँगे" ||

"बीते लम्हें जब भी याद आएँगे"||

- प्रतीक

## ओएसिस हिन्दी प्रेस टीम

**संपादक**
पुष्प सौरव

**सह संपादक**
सुमन
ऋत्विक

**संपादक मंडल**
शैलेश
प्रतीक
नित्य
भावेश
ऋतू

**पत्रकार**
आलोक
लोकेश
कश्यप
उज्वल
प्रेम
विभु
सुखद
गणेश
श्रुति
देबजीत
प्रभव
विशाल
पीयूष
नीतिश
आदित्य
अनुराग
ऋषि
किशन
निशांत
अभिनव

**आभार**
निरुपम
राज
प्रगति
स्नेहिल

# मेरी कलम से

देखते ही देखते ओएसिस समाप्त हो गया| ओएसिस में क्या दिन और क्या रातें! सारा समय तो मस्ती और उल्लास में ही चला जाता है | ओएसिस को "उत्साह और उमंगों का सम्मेलन" कहें तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी | Bitsians के ट्यूट,क्विज और टेस्ट के थपेडों से भरे जीवन में यह लम्बा आनंदायी विराम वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण है | दिन भर आयोजित होने वाले भाँति-भाँति के कार्यक्रमों का लुत्फ़ उठाने के साथ यदि शाम को के.के.,यूफोरिया तथा सुरेन्द्र शर्मा जैसे ख्यातिप्राप्त व्यक्तित्व की महफ़िल सजे तो कौन तरंगित नही होगा | वास्तव में ओएसिस की भव्यता बिट्स की गरिमा बढाती है और ओएसिस जैसे उत्सवों को भव्य बनातें हैं हम Bitsians | इसीलिए तो हम कहतें हैं "BITSians rock "!

मुझे पूरा यकीन है की आप सभी ने इस ओएसिस का भरपूर आनंद उठाया होगा | अब तो कैम्पस भी काफी सूना सूना सा लग रहा है | सारे Outstis भी जा चुके हैं | चार दिन चले इस मेलें में मन रम सा गया था | अब तो ओएसिस 2009 का इन्तजार है |

मैं ओएसिस हिन्दी प्रेस की ओर से आप सभी का आभार व्यक्त करती हूँ | अब अगले वर्ष तक के लिया विदा दीजिए| मेरी कलम से बस इतना ही |

धन्यवाद्

सुमन

# फैशन परेड

जब ओएसिस जैसा महोत्सव समाप्त होने को हो तब निश्चित रूप से चाहे आयोजक हो या मेहमान ... सभी का उत्साह ठंडा पड़ना स्वाभाविक है | 72 से भी ज़्यादा घंटो की गर्मी जब ठंडी होने लगी तब इसे फ़िर से बढ़ाने के लिए ओएसिस के बहुप्रतीक्षित इवेंट फैश-पी का समय निश्चित रूप से इससे अच्छा नही हो सकता था | फैशन - अर्थात वर्तमान समय का सबसे ज़्यादा चर्चित एवं विवादस्पद विषय | ऐसे में जब ऑडी में बिट्स एवं अन्य कॉलेज के कुछ लुभावने चेहरों ने आधुनिक परिधानों से सुसज्जित होकर अपना जलवा बिखेरा तो निश्चित रूप से ही यह कार्यक्रम सफल तो होना ही था | फैश-पी की शुरुआत सभी इवेंट्स की तरह ही करीब 2 घंटे देर से हुई | शो की शुरुआत सीसीटीवी द्वारा बनाये गए आकर्षक विडियो से हुई जिसे सभी ने सराहा |सर्वप्रथम खालसा कॉलेज की टीम ने अपने फैशन के जलवे बिखेरे |उसके बाद KNC की लड़कियों ने अपनी नफासत एवं अदाओं से दर्शकों का दिल जीत लिया | तत्पश्चात आई बिट्स की टीम जिसने राजस्थानी संस्कृति की झलक दिखाने की कोशिश की एवं साथ ही आधुनिक परिधानों में भी प्रदर्शन किया |इसी प्रकार JMIT, DCAC और MAIT ने भी अपने आकर्षक परिधानों में कैटवाक किया | इस कार्यक्रम को देखते हुए बरबस ही 23 को कवि सम्मेलन में सुरेन्द्र जी द्वारा कही गई वे पंक्तिया याद आ गईं जिसमें उन्होंने आजकल महिलाओं के कम होते हुए कपड़ो पर कटाक्ष किया था .... यहाँ भी कुछ ऐसा ही नज़ारा देखने को मिल रहा था | :) खैर हम कौन होते हैं शिकायत करने वाले... आखिर ये ज़माना तो ग्लोबलाइजेशन का है भाई | :) साथ ही इस बार ऑडी में दर्शको का व्यवहार भी अपेक्षा के अनुरूप नही था एवं कई घोषणाओ में बाधा पड़ी | साथ ही रैंप पर चल रहे models पर कागज़ के विमान भी फेके गए... खैर यह सब तो मस्ती का एक हिस्सा है पर मर्यादा के भीतर रहे तो ही अच्छा है | इस प्रकार यूनियो मिस्टिका ओएसिस का अंत अब आ चुका है..और शेष रह जाएंगी तो बस कुछ खट्टी कुछ मीठी यादें......

-लोकेश

***ओएसिस हिन्दी प्रेस परिवार - 08 की तरफ़ से आप सभी को सलाम !!!***